# बेलन घाटी

DR. MANOJ KUMAR
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST)
DEPT. OF A.I.H. & ARCHAEOLOGY,
PATNA UNIVERSITY, PATNA-800005
PG / M.A. 3RD SEMESTER
CC-11, PRE AND PROTO HISTORY OF INDIA AND INDIAN POTTERIES

बेलन टोंस की सहायक नदी है, जो मिर्ज़ापुर के मध्यवर्ती पठारी क्षेत्र की प्रमुख नदी है। बेलन घाटी का क्षेत्र मुख्यत: इलाहाबाद के मेजा तहसील से लेकर वाराणसी के चकिया तहसील तक है।

भारतीय प्रागैतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से बेलन घाटी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। बेलन घाटी एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ पाषणयुगीन समस्त संस्कृतियाँ एक क्रम में दृष्टिगोचर होती है। निम्नपूरापाषाण काल से लेकर मध्यपाषाणकाल तक संस्कृतियों की क्रमबद्धता यहाँ देखी जा सकती है। यही कारण है की H. D. Sankaliya ने बेलन घाटी के मुख्य अनुभाग को Text Book of Section की संज्ञा प्रदान की है।

# बेलन घाटी के महत्वपूर्ण पुरास्थल

1. **नदोह**
2. **बालुहवा**
3. **भारुहवा**
4. **बटुआबीर**
5. **रामगढ़वा**
6. **खुटनाबीर**
7. **बिधा**

# बेलनघाटी में महत्वपूर्ण कार्य

१. जी आर शर्मा ( गोवर्द्धन राय शर्मा )
२. पी. सी. पन्त
३. दसाराम एस विश्वास
४. पी. पी. सत्संगी और ए. के. दत्ता
५. बी. डी. मिश्रा
६. जी.जी.मजुमदार और एस. एन. राजगुरु

जी.आर. शर्मा:- बेलन घाटी को भारतीय इतिहास के मानचित्र पर लाने का श्रेय इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रोफेसर गोवर्धन राय शर्मा को जाता है। इन्होंने बेलन घाटी का अध्ययन कर वहां पर जमावो का क्रम निर्धारित किया है।

बेलन घाटी के लगभग 64 किलोमीटर के क्षेत्र में पुरातात्विक अन्वेषण या सर्वेक्षण का काम किया गया है। इन अध्ययनों के पश्चात बेलन घाटी के बिल जमावों को 10 विभिन्न इकाइयों में वर्गीकृत किया गया है।

बेलन घाटी के इस समय आधारभूत प्रथम ग्रैवेल के ऊपर 3 मीटर मोटा जलोढ़ मिट्टी का जमाव है। इस जमाव से पाषाण उपकरण उपकरण तथा पशुओं के जीवाश्म पर्याप्त संख्या में नहीं मिले हैं। कुछ भूतत्वविद् यह मानते हैं कि प्रथम ग्रैवेल में जो जीवाश्म तथा बड़े उपकरण प्राप्त हुए हैं वह द्वितीय ग्रैवेल से संबंधित हो सकते हैं। इनका वजन अधिक होने के कारण यह नीचे के भुतात्विक जमाव में एकत्र हो गए होंगे।

सिल्ट के ऊपर लगभग 2.74 मीटर मोटा द्वितीय ग्रैवेल का जमाव है। यद्यपि द्वितीय ग्रैवेल का जमाव आद्र जलवायु में हुआ। लेकिन उसमे मिलने वाले पेबल तथा प्रस्तर खंड उपकरण पूर्व की अपेक्षा आकार में छोटे हैं।

द्वितीय ग्रैवेल को भी तीन (3) उप वर्गों में बांटा गया है। सबसे निचले भाग से क्लीवर तथा स्क्रैपर उपकरण प्राप्त हुए हैं। मध्य तथा ऊपरी भाग में मध्य पुरापाषाण काल के विशिष्ट उपकरण मिले हैं।

द्वितीय ग्रेवल के ऊपर लाल रंग की जलोढ़ मिट्टी का जमाव है जिसकी मोटाई 1.25 मीटर है। इस जमाव में कंकड़, लैटेराइट तथा पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े प्रचूर संख्या में प्राप्त हुए हैं। शुष्क जलवायु में निर्मित लाल मिट्टी के इस जमाव से मध्य पुरापाषाण काल के उपकरण प्रकाश में आए हैं।

लाल मिट्टी के ऊपर 1.52 मीटर मोटा पीली दोमट मिट्टी का जमाव मिलता है। इस जमाव के नीचले चरण से मध्यपुराप्रस्तर काल के स्क्रैपर तथा प्रारंभिक ब्लेड उपकरण मिले हैं। इस जमाव के ऊपर तृतीय ग्रेवल का जमाव मिलता है जो उच्च पुरापाषाण काल से संबंधित है।

इस जमाव में बालू की मात्रा काफी अधिक है। इसकी मोटाई 1.21 मीटर है। इसके ऊपर मटमैली मिट्टी का जमाव है जो लगभग 1.82 मीटर मोटा है। इस जमाव से उच्च पुरापाषाण काल के ब्लेड तथा मध्य पाषाण काल के ज्यामितीय उपकरण मिलते हैं। इसके ऊपर काली मिट्टी का जमाव है जो 2.43 मीटर मोटा है।

आद्र जलवायु में निर्मित होने के कारण मिट्टी का रंग काला हो गया है। इस जमाव से मध्य पाषाण काल के ज्यामितीय उपकरण प्राप्त हुए हैं। सबसे ऊपर भूरी मिट्टी का जमाव है जो लगभग 4 मीटर मोटा है। जिसमें लघु पाषाण उपकरण प्रचुर मात्रा में मिले हैं।

उपर्युक्त स्थलों के अलावा जी.आर. शर्मा ने ग्रैवेल 4 की बात भी की है, जो महगड़ा नामक पुरास्थल से उपलब्ध है और प्रारंभिक नवपाषाण काल से संबंधित है।

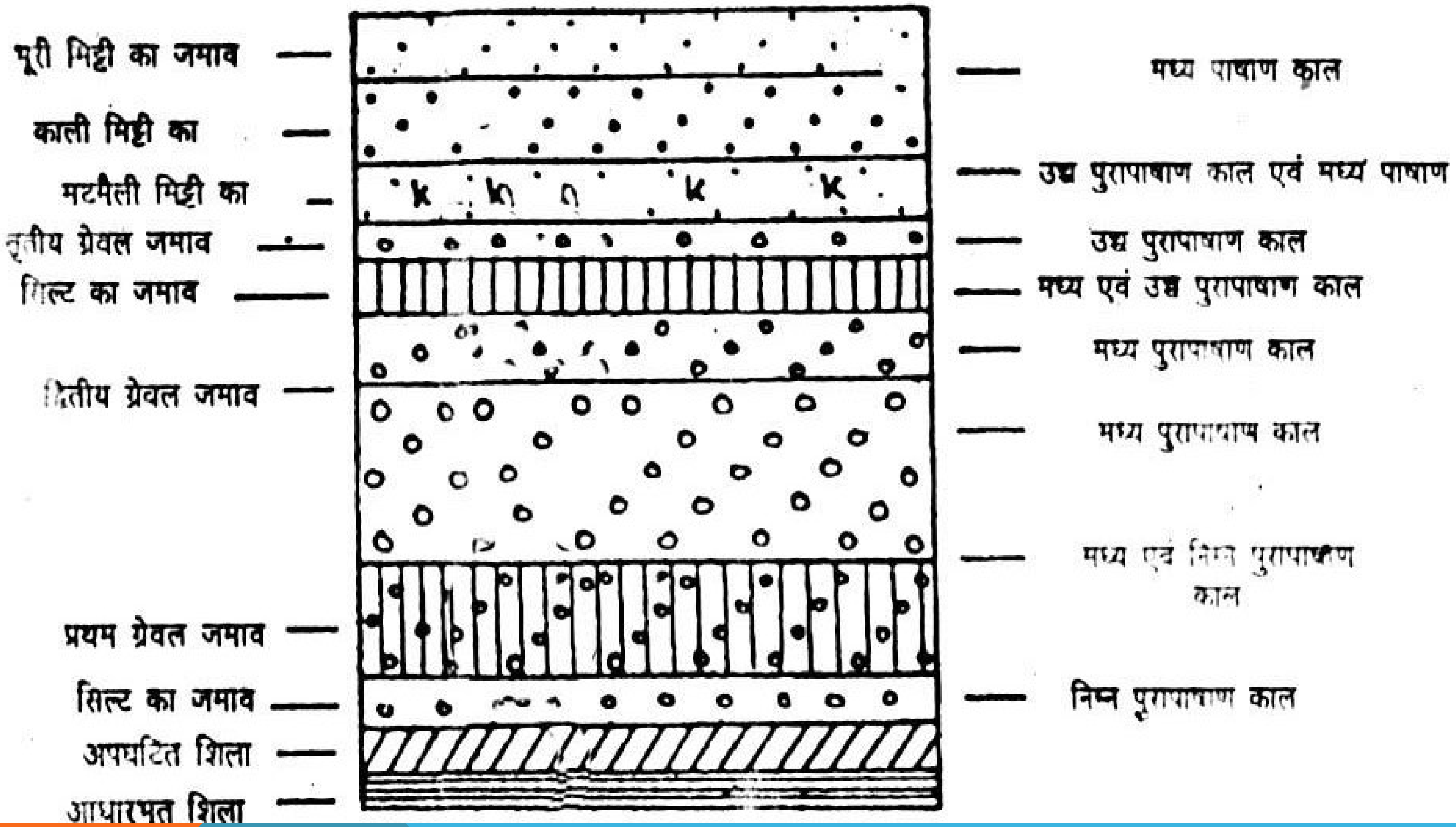


एस एन राजगुरु और जी. जी. मजूमदार

**DASSHA RAM & S. VISHWAS 1972** ईस्वी में डॉ एस. विश्वास ने बेलन घाटी का अध्ययन कर इसे दूसरे तरीके से परिभाषित करने का प्रयास किया है । यहां उन्होंने जमावो को 6 यूनिट में बांटा है तथा यह बताया है कि इस घाटी में हिमयुगीन परिवेश व्याप्त था । इन्होंने निचले दो जमावो को केवल प्रतिनुतन काल से संबंधित माना है । तथा शेष चार जमावो को यह नूतन काल से संबंधित मानते हैं ।

जी.जी. मजूमदार तथा एस.एन. राजगुरु इन्होंने बेलन घाटी के जमाव का भौतिक तथा रासायनिक विश्लेषण किया है। उन्होंने बताया है कि बेलन के जमाव में जो भी ग्रैवेल तथा सिल्ट के जमाव हैं। वह नदी के पानी के ही जमाव हैं।

सिल्ट (Silt) ठहरे हुए पानी में निर्मित हुए हैं जबकि ग्रैवेल जमाव नदी में अधिक पानी होने की तरफ इंगित करते हैं।

पी.पी. सत्संगी एवं ए.के. दत्ता  इन्होंने इस क्षेत्र में उपलब्ध पशु अवशेषों का अध्ययन किया है। जिसमें इन्होंने ग्रैवेल एक और दो से स्तनपाई पशुओं जैसे बॉस नमेडिकस, Equicus, Eliphas का अध्ययन किया है। पशुओं का यह वर्ग नर्मदा घाटी में पाई जाने वाली नमेडिकस वर्ग के समकालीन था।

पी.सी. पंत इन्होंने अपने शोध में बेलन घाटी में हुए पूर्ववर्ती कार्यों का आलोचनात्मक समीक्षा किया है । इन्होंने Dassha Ram & S. Vishwas के द्वारा प्रतिपादित की कल्पनाओं का खंडन किया है । उन्होंने अपना अध्ययन 1982 में प्री हिस्टोरिक उत्तर प्रदेश में प्रकाशित किया है ।

वी.डी. मिश्रा उन्होंने कुल 44 निम्न पुरापाषाण कालीन पुरास्थलों की बात की है। जिसमें 17 पुरास्थल उद्योग या फैक्ट्री साइट अथवा पुरास्थल हैं।

मध्यपुरापाषाण कालीन 87 पुरास्थलों की पहचान की गई है, जिसमें 25 पुरास्थल कारखाने पुरास्थल हैं। इनके द्वारा 97 उच्च पुरापाषाण काल के पुरास्थलों का भी उल्लेख किया गया है जिसमें अधिकांश पुरास्थल उद्योग पुरास्थल हैं।

बेलन घाटी के तृतीये ग्रेवेल के कई तिथि ज्ञात हुए है।
देवघाट से दो तिथि ज्ञात है।

1. 25790 ± 1830 B.P 2. 19715 ± 330 B.P

कोल्डिहवा **24330 ± 350 B.P**

महगाड़ा के तथा कथित ग्रेवेल **IV** की भी दो **C - 14** तिथियाँ उपलब्ध है ।

1. 12190 ± 410 B.P
2. 9350 ± 130 B.P

# जी. आर. शर्मा के द्वारा किया गया वर्गीकरण

| जलवायु | जमाव | सांस्कृतिक जमाव |
|---|---|---|
| शुष्क | एयुलिन जमाव | |
| शुष्क | एयुलिन जमाव | MESOLITHIC TOOLS |
| शुष्क नम | काली मिट्टी का जमाव | U.P + MESOLITHIC |
| नम | सीमेंटेड ग्रेवेल III | U.P |
| शुष्क | पिली मिट्टी का जमाव | M.P + U.P |
| शुष्क | पेबुल टूल्स | M.P TOOL |
| शुष्क | लाल बालू का जमाव | M.P TOOL |
| शुष्क | सैंडी पेबल सीट | M.P TOOL |
| शुष्क | लाल बालू का जमाव | M.P TOOL |
| नम | सीमेंटेड ग्रेवेल II C | M.P TOOL |
| नम | सीमेंटेड ग्रेवेल II B | M.P TOOL CHERT + QUARTZITE |
| नम | सीमेंटेड ग्रेवेल II A | M.P + L.P QUARTZITE |
| शुष्क | मौटल्ड क्ले | |
| नम | सीमेंटेड ग्रेवेल I A | L.P QUARTZITE |
| | अपघटित शिला | PEBBLE TOOL |
| | आधारभूत शिला | |

# THANKING YOU